आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Special Issue

अतिथि संपादक

डॉ. प्रकाश शिंदे

डॉ. मुखत्यार शेख

डॉ. नागनाथ वारले

डॉ. गोविंद शिवशेट्टे

डॉ. अनिलकुमार राठोड

डॉ. भगवान कदम

प्रा. राकेश वैद्य

डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

“Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) रवीन्द्रनाथ टैगोर: विश्वविख्यात सृष्टा
डा०शीनू, बुलन्दशहर ||58

14) एकलव्य
डॉ. सुनिता मोटे, अहमदनगर ||62

15) दलित साहित्य का उद्भव—विकास
डॉ. बेठियार सिंह साहू, छपरा, बिहार ||65

16) संतोष शैलजा के 'दीपशिखा' का अध्ययन
डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत, जि.नाशिक ||69

17) जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति
डॉ. यशोदा मेहरा, कोटा ||75

18) मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युगबोध
प्रा.हिरा पोटकुले, गढी ||78

19) लैंगिक असमानता एवं सामाजिक सरोकार
डॉ. लक्ष्मण लाल सरगड़ा, बांसवाड़ा (राज.) ||81

20) राग दरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मकता
मुकेश चौहान, कामरूप, (असम) ||84

21) महान देशभक्त 'कस्तूरबा गांधी'
पूजा काशीनाथ मुठ्ठे, औरंगाबाद, महाराष्ट्र ||89

22) कथा साहित्य के अंतर्गत रेणु के कथेतर रचना कौशल का प्रबंधन
डॉ. राजेश कुमार मिश्र, श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब) ||93

23) शोध में अलख
रोहितेश आमलिया, बांसवाडा (राज.) ||97

24) साठोत्तर महिला उपन्यास लेखन में नारी विद्रोह के स्वर : एक चिन्तन
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार, सागर (म०प्र०) ||100

25) 'गोदान' में वर्णित सामाजिक समस्याएँ
सौरभ सराफ & डॉ. अर्चना झा, भिलाई ||104

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

18

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युगबोध

प्रा.हिरा पोटकुले
हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढी

****

कविवर मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि है जिनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता, समाज सुधार, युग–निरूपण, भारतीय संस्कृति, नवजागरण, स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, सामाजिक विषमता, नारी भावना का चित्रण किया है। गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में इन मूल्यों का समावेश करते हुए युगबोध और समसामायिकता का परिचय दिया है। मानवतावाद के समर्थक गुप्त जी ने निष्काम कर्म, विश्व बंधुत्व, सामाजिक समता, राष्ट्रीय चेतना एवं हिंदू– मुस्लिम एकता पर विशेष बल देते हुए जड़ता और निष्क्रियता को समाप्त कर आत्म गौरव की भावना को जागृत करने में निश्चय ही जीवन पर्यंत प्रयासरत रहे। उनकी कविता में तत्कालीन युग का समग्र प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत– भारती, तिलोत्तमा, चंद्रहास, पत्रावली, वैतालिक,किसान, किसान,अनघ, पंचवटी, हिंदू, शक्ति, सैरन्ध्री, बक्र–संहार, विकट –भट,गुरुकुल, साकेत, यशोधरा, द्वापर आदि कृतियों में कवि ने मानव का उत्थान और निराशा से बाहर निकालकर जनता में आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया है। गुप्त जी के पात्र भले ही पौराणिक है लेकिन उन्हें आधुनिकता के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है।

अतीत के प्रति प्रेम

गुप्ताश जी ने अपने काव्य में अतीत के उन महान चरित्रों को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है जो वर्तमान समय में हमारे हृदय में वीरता को जगाते हैं, देश एवं जाति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करते हैं, पतन के गर्त से ऊपर उठने की प्रेरणा देते हुए वर्तमान की कठोर परिस्थितियों से जूझने की शक्ति, नई ऊर्जा निर्माण करते हैं। गुप्त जी के यह दृष्टि में भारतीयों के जीवन में अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करती है। गुप्त जी ने ईश्वर को लीलिवतिरी मानव न दिखाकर मानव को ही ईश्वरत्व की शक्ति से मंडित किया है। गुप्त जी करीत की वैभवशाली परंपरा में विश्वास रखते है।कवि का यांना है कि हिंदुस्तान की प्राचीन सभ्यता ही जनता को वह प्रेरणा, वह संदेश दे सकत है जिससे जनता के मन मे राष्ट्रीय भावना निर्माण और आत्मविश्वास निर्माण हो।

ज्यों ज्यों प्रचुर प्राचीनता की खोज बढती जायेगी।/
ज्यों त्यों हमारी उच्चता पर ओप चढती जाएगी।(१)/

राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविता राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता है जो सांप्रदायिकता और जातीयता से ऊपर अति उदार और व्यापक से। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडंबरों एवं निरर्थक रुढियों पर जोरदार प्रहार किया है साथ ही अपनी परंपरा के उपयोगी तत्वों का प्रबल समर्थन भी किया है। कवि ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय भावनाओं का सर्वाधिक

प्रचार एवं प्रसार किया है। भारत— भारती में देशवासियों का ध्यान उनकी वर्तमान दुर्दशा की ओर आकृष्ट किया है और अतीत के गौरवण्यात झांकी प्रस्तुत करके देशवासियों को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य किया है। भारत —भारती में कवि ने भारतवर्ष के महत्व का प्रतिपादन किया है—

भू—लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला—स्थल कहां?/ फैला मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहां।/ संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?/ उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारत वर्ष है।(२)

राष्ट्रकवि गुप्त जी ने अपने काव्य में नारी के महत्व को प्रस्तुत करते हुए उसे समाज में उचित स्थान देने, उसके विभिन्न रूपों को जानने के साथ—साथ उसे अपनी गहरी संवेदना देने की दृष्टि के कारण आधुनिक युग में कवि का स्थान सर्वोपरि है। कवि ने नारी विषयक उदार दृष्टिकोण रखकर पीड़ित, उपेक्षित नारी का चित्रण किया है। उन्होंने साकेत महाकाव्य में वियोगिनी उर्मिला का, मातृत्व भावस से युक्त कैकेयी का, यशोधरा खंडकाव्य में यशोधरा का, द्वापर काव्य में विधृता,तथा विष्णुप्रिया में इसकी नायिका का चित्रण बड़े मनोयोग से चित्रित किया है। गुप्त जी ने नारी के संपूर्ण जीवन को जिन दो पंक्तियों में व्यक्त किया है यह उनके नारी भावना की मार्मिकता है—

अबला जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी/ आंचल में है दूध और आंखों में पानी। (३)

गुप्ता जी ने इन पंक्तियों में नारी को अबला कहते हुए उसकी असामर्थ्य एवं अक्षमता पर दुख व्यक्त करते हैं और नारी के मातृत्व भाव की प्रबलता को स्वीकार करते हुए उसके जीवन को दुख भरा हुआ माना है। नारी की दुरावस्था को उन्होंने मुखर वाणी दी है। कवि का मानना है कि अपनी अर्धांगिनी को अधिकारों से दूर रखने वाला पुरुष है नारी के शोषण के लिए उत्तरदाई है। नारी पर अविश्वास करने वाला पुरुष भी नारी की कोख से उत्पन्न हुआ है। कवि तत्कालीन और वर्तमान समाज के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित करता है कि और जननी होकर भी नारी को पाप की पिटारी कहना कहां तक उचित है?

अविश्वास, हां! अविश्वास ही नारी के प्रति नर का, /नर के तो सौ दोष क्षमा हैं, स्वामी है वह घर का।/उपजा किंतु अविश्वासी नर हाय! तुझी से नारी!/जाया होकर जननी भी है तू ही पाप की पिटारी। (४)

कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य में वसुधैव कुटुंबकम की भावना को व्यक्त किया है। कवि विश्व बंधुत्व की भावना को महत्व देते हैं परिणाम स्वरूप युध्दों का विरोध करते हैं। अहिंसा, करुणा के भाव से प्रेरित कवि विश्व वेदना की रचना करके युद्ध की विभीषिका से राष्ट्र और समस्त विश्व को अवगत कराते हैं। विश्व को हिंसा से विमुख करके प्रेम और शांति से राज्य में विचरण करने का संदेश दिया है गुप्त जी के विचार है कि अनेक धर्म के होते हुए भी लोग आपस में बंधू बन सकते हैं

होकर भी विभिन्न मतनिष्ट हो सकते हैं बंधु वरिष्ठ/ मिले लौटकर यदि सविवेक तो है तीन और छः एक।(५)

गुप्त जी ने भारतीय समाज में व्याप्त विषमता को दूर करने के लिए समाज में क्रांति लाने का

उद्घोष किया है। कवि ने सदैव सजग एवं जागरूक होकर अपने साहित्य के माध्यम से ही प्रेरणादायक युवाओं को कार्यों को करने की सलाह दी है । भारतीय समाज में व्याप्त धर्म, जाति, संप्रदाय, प्रांतीयता,भाषा आदि के आधार पर आनेक भेद दिखाई देते हैं जिसके कारण निरंतर सामाजिक विषमता की वृद्धि होती है और हमारी एकता और अखंडता के सामने समस्या निर्माण होती है। कवि का मानना है कि जब तक भारत के सभी वर्ग एवं सभी जातियां मिलकर अपनी प्रगति के लिए प्रयत्नशील नहीं होंगीं तब तक न तो हम पराधीनता के शिकंजे से मुक्त हो सकते हैं और न अपनी प्रगति कर सकते हैं। सामाजिक एकता की स्थापना के लिए सभी भारतीयों को पारस्पारिक प्रेम से रहना चाहिए ।

भारतीय समाज में हिंदू और मुसलमान या हिंदू और सिख अथवा हिंदू और जैन एवं बौद्ध धर्म के लोग आपस में लड़ते रहे हैं। कवि ने इस समस्या को उद्घाटित करते हुए परस्पारिक संघर्ष को त्याग कर भाईचारे से रहने का संदेश दिया है। कवि ने इस व्याप्त भिन्नता में भी अभिन्नता को देखने की सलाह दी जिससे हमारी सामाजिक एकता खंडित ना हो और हम विदेशी सत्ता के चंगुल से मुक्त होकर जीवनआवश्यक सुख —सुविधाएं प्राप्त कर सकें—

अनुदारता— दर्शक हमारे दूर सब अविवेक हों,/
जितने अधिक हों तन भले हैं, मन हमारे एक हों।/
आचार में कुछ भेद हो पर प्रेम हो व्यवहार में, /
देखे, हमें फिर कौन सुख मिलता नहीं संसार में।।(६)

भारत पारतंत्र्य में था इसके बावजूद कवि कभी भी निराश नहीं हुए और अपनी साहित्य के माध्यम से सामान्य जन के मन में एक चेतना का संचार करते रहे हैं। कवि भारत की तत्कालीन समाज की दुर्गति, गरीबी को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। गुप्त जी स्वदेश एवं समाज की बात करते हैं। मानव जाति को जागृत करने का कार्य करते हैं —हम कौन थे क्या हो गए।

अपने स्वाभिमान को जगाने का कार्य केवल कभी ही कर सकता है। मानव का उत्थान और निराशा से बाहर निकलकर जनता में आत्मविश्वास जगाने में गुप्त जी सफल दिखाई देते हैं। गुप्त जी के पात्र भले ही पौराणिक हैं लेकिन उन्हें आधुनिकता के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है और उसी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के लिये राष्ट्र के सामान्य मनुष्य के ह्दय में संवेदना निर्माण की है।

संदर्भ सूची:—

१) भारत—भारती—मैथिलीशरण गुप्त,पृ.७२

२) भारत—भारती—मैथिलीशरण गुप्त,पृ.११

३) यशोधरा—मैथिलीशरण गुप्त,पृ.४७

४) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधी कवी —द्वारिका प्रसाद सक्सेना,पृ.८२

५) भारत—भारती—मैथिलीशरण गुप्त,पृ.६६

६) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधी कवी —द्वारिका प्रसाद सक्सेना,पृ.८१

❑❑❑